ओमशांति। बाप पावन बना रहे हैं बच्चों को। तो ज़रूर बाप से प्यार चाहिए। भल भाईयों–भाईयों का आपस में प्यार तो ठीक है। एक बाप के सभी बच्चे भाई–भाई हैं; परंतु पावन बनाने वाला एक बाप ही है; इसलिए सभी बच्चों का लव एक बाप में चला जाता है। बाप कहते हैं हे बच्चों मामेकं याद करो। यह तो ठीक है तुम भाई–भाई हो, ज़रूर खीर–खण्ड ही होंगे। एक बाप के बच्चे हो। आत्मा में ही इतना प्यार है। जबकि देवताई पद प्राप्त करते हो, तो बहुत ही आपस में तुम्हारा प्यार चाहिए। हम भाई–भाई बनते हैं, बाप से वर्सा लेते हैं। बाप आकर सिखलाते हैं। जो समझने वाले होते हैं वह समझते हैं यह स्कूल है। बड़ी यूनिवर्सिटी है। बाप सभी को दृष्टि देते हैं वा याद करते हैं। बेहद का बाप सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को, सभी आत्माओं को याद करते हैं। बाप की ही सारी दुनियाँ है, नई वा पुरानी। नई बाप की है, तो पुरानी नहीं है क्या? बाप ही सभी को पावन बनाते हैं। पुरानी दुनियाँ भी मेरी ही है। सारी दुनियाँ का मालिक मैं ही हूँ। भल मैं नई दुनियाँ में राज्य नहीं करता हूँ; परंतु है तो मेरी ना। मेरे बच्चे, इस मेरे बड़े घर में सुखी भी बहुत रहते हैं और फिर दुःख भी पाते हैं। यह खेल है। यह सारी बेहद की दुनियाँ हमारा जैसे घर है। बड़ा माण्डवा है ना। बाप जानते हैं सारे घर में हमारे बच्चे हैं। सारी दुनियाँ को देखते हैं। सभी चैतन्य हैं। सभी बच्चे इस समय दुःखी हैं; इसलिए सभी पुकारते हैं। बाबा हमको छी–छी, दुःखी दुनियाँ से शांति की दुनियाँ में ले चलो। शांतिदेवा। बाप को पुकारते हैं, देवताओं को पुकारते हैं; परंतु सिवाय बाप के शांति कोई दे न सके। सभी का वह बाप है। उनको सारी सृष्टि का फुर्णा रहता है। बेहद का घर है। बाप जानते हैं, इस बेहद के घर में इस समय सभी दुःखी हैं; इसलिए कहते हैं शांतिदेवा, सुखदेवा। दो चीज़ मांगते हैं ना। अभी तुम जानते हो अभी हम बेहद के बाप से सुख का वर्सा ले रहे हैं। बाप आकर के हमको सुख भी देते हैं, शांति भी देते हैं। और कोई सुख–शांति देने वाला तो नहीं है ना। बाप को ही तरस पड़ेगा। वह है बेहद का बाप। तुम समझते हो हम बाबा के बच्चे बहुत सुखी थे, जबकि पवित्र थे। फिर अपवित्र बनने से दुःखी हो जाते हैं। काम चिक्षा पर बैठ काले बन जाते हैं। मूल बात कि बाप को भूल जाते हो। जिस बाप ने(से) इतना ऊँच पद पाया। गाते भी हैं ना तुम मात–पिता.... सुख घने थे। सो फिर अभी ले रहे हो; क्योंकि अभी दुःख घनेरे हैं। यह है तमोप्रधान दुनियाँ। विषय सागर में गोते खाते रहते हैं। समझ कुछ भी नहीं है। तुमको अभी समझ मिली है। समझते हो यह रौरव नर्क है। यह भी समझते नहीं हैं। बाप बच्चों से पूछते हैं अभी तुम नर्क वासी हो या स्वर्गवासी? जब कोई मरता है तो कह देते हैं स्वर्ग़वासी हुआ। अर्थात् दुःखों से दूर हुआ। फिर नर्क की चीज़ें उनको क्यों खिलाते हो। इतनी भी बुद्धि नहीं है। बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं ना। बाप आकर स्वर्ग़ की स्थापना करते हैं। तुम बच्चों को राजयोग सिखाते हैं। तुम समझते हो भारतवासी कितने ऊँच थे। अभी कितने जट बन बड़े हो। एक की बायोग्राफी में दूसरे का नाम डाल दिया है। यह बेवकूफ़ी है ना। एकसा बेवकूफ़ कौन था? व्यास भगवान। यह भी ड्रामा में नूँध है। भूल ज़रूर होनी चाहिए तब तो भक्ति मार्ग बनी(ा) जो फिर नीचे गिरे। बाप कहते हैं, मीठे बच्चे मैं तुमको यह नॉलेज सुनाता हूँ। मेरे में ही यह नॉलेज है। ज्ञान सागर मैं हूँ। कहते हैं यह शास्त्रों की अथॉरिटी है। वह भी आत्मा ही है ना। यह भी समझते नहीं हैं। इतनी(ने) पत्थर बुद्धि बन गये हैं सभी धर्म के मनुष्य। जिनको कुछ भी मालूम नहीं है। बाप का ही पता नहीं है। भल कोई भी हो। गाली क्यों देते हो। सब ... जास्ती तो यह गाली देते हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, बराह अवतार। ठिक्कर–भित्तर स(भी) में है। सभी अधर्मी बन गये हैं। फिर अनेक धर्मों का विनाश कर, एक सतधर्म की स्थापना करते हैं। इस समय सभी अधर्मी बन गये हैं। मेरी कितनी ग्लानी करते हैं। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं, उनके लिए कहते हैं, ठिक्कर–भित्तर सब में है। व्यास भगवान ने क्या–2 लिख दी (दिया) है। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। बिल्कुल ही ऑरफन ब(न) पड़े हैं। आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। बाप बेहद की बातें समझाते हैं। तुम निर्धण के बन जाने कारण लड़ते–झग(ड़ते)

रहते हो। बाप रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत को कोई भी नहीं जानते। बाप रचयिता ही अपना और रचना के आदि, मध्य, अंत का राज़ समझाते हैं। और तो कोई बता न सके। भगवान रचयिता ही आदि, मध्य, अंत को जानते हैं। और कोई मनुष्य नहीं जानते। तुम कोई से भी पूछो, जिसको ईश्वर, भगवान, रचयिता कहते हो उनको तुम जानते हो? इतने वेद–शास्त्र आदि पढ़े हो; परंतु तुम उनको जानते हो? ठिक्कर–भित्तर, कुत्ते–बिल्ले में ईश्वर है यह ही जाना है। कुत्ते–बिल्ले हैं गोया उनका बच्चा हुआ। तुम्हारे शास्त्रों में यह है। कहते हो, कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, व(ा)राह अवतार। ऊपर से अवतरते हैं, तो ज़रूर पहले शरीर धारण करते हैं ना। ऐसे तो नहीं ऊपर से कोई कच्छ–मच्छ आते हैं। पहले अपन को तो समझो। मनुष्य तमोप्रधान हैं तो जनावर आदि सभी तमोप्रधान, दुःखी हो गये हैं। मनुष्य सतोप्रधान, सुखी हैं तो सभी सुखी बन जाते हैं। जैसे मनुष्य वैसे उनके फर्नीचर भी होते हैं। साहूकार लोग का फर्नीचर भी अच्छा होता है। तुम बिल्कुल सुखी विश्व के मालिक बनते हो, तो तुम्हारे पास हर चीज़ सुखदाई ही होते(ती) है। वहाँ दुःखदाई कोई चीज़ होगी ही नहीं। यह नर्क है ही गंदी दुनियाँ। मुनष्यों को लज्जा नहीं आती, कह देते हम सभी भगवान हैं। बाप आकर समझाते हैं भगवान तो एक ही है। वही पतित–पावन है। स्वर्ग़ की स्थापना करते हैं। देवताओं की महिमा भी गाते हैं। सर्व गुण सम्पन्न..... मंदिरों में जाकर देवताओं की महिमा और अपनी निंदा करते हैं; क्योंकि सभी अपवित्र, भ्रष्टाचारी हैं। कोई भी सन्यासी हो, शंकराचार्य हो भ्रष्टाचार से ज़रूर पैदा होते हैं। कहा जता है यह है भ्रष्टाचारी दुनियाँ। नर्क वासी दुनियाँ। श्रेष्ठाचारी, स्वर्ग़वासी तो यह ल.ना. हैं ना। जिनकी सभी पूजा करते हैं। सन्यासी भी करते हैं। जब तक बड़े हों तब तक भक्ति करते हैं। सतयुग में ऐसे नहीं होता। तुम्हारा सन्यास है बेहद का। बेहद का बाप आकर बेहद का सन्यास कराते हैं। वह है हठयोग। हद का सन्यास। वह धर्म ही दूसरा है। बाप कहते हैं, तुम अपने धर्म को भूल कितने धर्मों में घुस गये हो। अपने भारत का ही नाम हिन्दुस्तान रख दिया है और फिर हिन्दु धर्म कह दिया है। वास्तव में हिन्दु धर्म तो कोई ने स्थापन ही नहीं किया। मुख्य धर्म है ही देवी–देवता, इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चयन। यह भी किसको पता नहीं है; इसलिए इनको कहा जाता है तुच्छ बुद्धि। स्वच्छ बुद्धि बनाने बाप को जानते ही नहीं। बिल्कुल तुच्छ बुद्धि बन पड़े हैं। पारस बुद्धि, फिर पारस बुद्धि से पत्थर बुद्धि देवताएँ ही बनते हैं। यह सारी दुनिया है आइलेंड। उसमें रावण राज्य है। रावण देखा है? जिसको घड़ी–2 जलाते हैं। यह सबसे पुराना दुश्मन है। यह भी समझते नहीं कि हम क्यों जलाते हैं। समझ चाहिए ना। यह क्या है? यह कब से जलाते हैं? समझते हैं परम्परा से। अरे इनका भी कोई हिसाब। तो बुद्धू ठहरे ना। इस समय माया के राज्य में पतित भ्रष्टाचारी बन पड़े हैं। तुमको कोई जानते ही नहीं। शूद्र बुद्धि तुमको क्या जाने। तुम हो ब्रह्मा के बच्चे। तुम से कोई पूछे तुम किसके बच्चे हो? अरे, हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं तो उनके बच्चे ठहरे ना। ब्रह्मा किसका बच्चा? शिवबाबा । हम उनके पौत्रे ठहरे। सभी आत्माएँ उनके बच्चे हैं। फिर शरीर में आने से पहले उनके बच्चे बनते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा है ना। इतनी प्रजा कैसे रचते हैं यह भी तुम जानते हो। यह एडॉप्ट्शन है। शिवबाबा एडॉप्ट् करते हैं। तो ब्रह्मा, बाप भी हुआ, माता भी हुआ। एडॉप्ट् करते हैं तो माँ–बाप दोनों चाहिए ना। शिवबाबा के एडॉप्ट् बच्चे हैं ब्रह्मा द्वारा। मेला भी लगता है। वास्तव में मेला वहाँ लगना चाहिए जहाँ ब्रह्मपुत्री नदी जाकर मिलती है। उस संगम पर मेला लगना चाहिए। यह भी मेला है ब्रह्मा यहाँ बैठा है। तुम जानते हो बाबा भी है, म(े)मा भी है; परंतु मेल है; इसलिए म(े)मा मुकर्रर किया जाता है कि तुम इन माताओं को सम्भालो। पुरुषों ने तो गुरु बन बेड़ा ही गर्क कर दिया है। सभी को भूटू बना दिया है। बाप कहते हैं, मैं तुमको सद्गति देता हूँ। फिर दुगर्ति कौन देते हैं? आजकल तो वह गुरु लोग सगाई भी कराते हैं। मना थोड़े ही करते हैं कि पवित्र बनना है। खुद भी जाते हैं। बाबा ने समझाया यह दुनियाँ बरोबर कोसघर है। यह है हिंसा। काम कटारी को हिंसा कहा जाता है। वह है डबल हिंसक। तुम हो डबल अहिंसक। वहाँ रावण होता ही

नहीं। भक्ति से होती है रात। ज्ञान से दिन। ज्ञान सागर बाप ही है। उनके लिए फिर कह देते, सर्वव्यापी है। इन जैसो(ा) बेवकूफ़ मनुष्य कोई हो नहीं सकता। जनावर से भी बदतर हैं। बाप ही आकर समझाते हैं और बच्चों को ही समझाते हैं। शिव भगवानुवाच है ना। शिव जयन्ति मनाते हैं तो ज़रूर कोई में आते हैं। कहते हैं, मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। मैं कोई छोटे बच्चे का आधार नहीं लेता हूँ। कृष्ण तो बच्चा है ना। मैं तो उनके बहुत जन्मों के अंत में, सो भी वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करता हूँ। वानप्रस्थ अवस्था बाद ही मनुष्य भगवान का सिमरण करते हैं। जिसको गुरु करते हैं वह तो भगवान को जानते ही नहीं। तब तो बाप कहते हैं, यदा–यदा हि..... मैं भारत में आता हूँ। भारत की महिमा अपरमअपार है। मनुष्यों को देह का अंहकार देखो कितना है। मैं फलाना हूँ, यह हूँ। अभी बाप आकर तुमको आत्मा अभिमानी बनाते हैं। मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ सभी राज़ समझाते हैं। यह है पुरानी दुनियाँ। सतयुग है नई दुनियाँ। सतयुग में आदि सनातन देवी–देवता धर्म ही था। 5000 वर्ष की बात है। शास्त्रों में तो फिर बुद्धू व्यास भगवान ने लिख दिया है, कल्प की आयु लाखों वर्ष है। कल्प की आयु ही लम्बी लिख दी है। वास्तव में है 5000 वर्ष का कल्प। मनुष्य बिल्कुल ही कुम्भकरण के(की) नींद में सोये पड़े हैं। किसने यह अज्ञान दिया? गुरुओं ने। गुरुओं ने कहाँ से लाया? शास्त्रों से। शास्त्र किसने बनाई(ए)? व्यास भगवान ने। इससे तो फिर भी नॉवेल अच्छी है। शास्त्र पढ़ने से तो मनुष्य दुगर्ति को ही पाया है। नॉवेल पढ़ना भक्ति थोड़े ही है। यूँ नॉवेल्स पढ़ने से कुछ फायदा नहीं है। वेदों शास्त्रों की तो गाड़ियाँ भरकर परिक्रमा करते हैं। खुद ही बैल बनकर गाड़ी को चलाते हैं। जिन शास्त्रों द्वारा दुगर्ति को पाया है, उन शास्त्रों की परिक्रमा दिलाते हैं। अभी यह बातें कोई नया सुनेगा तो गाली देगा; इसलिए बाप कहते हैं, मैं बच्चों से ही बात करता हूँ। मैं बच्चों को ही जानता हूँ। और तो सभी जंगली जनावर बन्दर हैं। हम इन सभी का सद्गति करता हूँ। गाली देने वाले भी सबसे नम्बरवन तो तुम ही ठहरे। भक्ति शुरू ही तुम करते हो ना। अपन को ही चमाट मारी है। बाप ने तुमको पूज्य बनाया, फिर तुम पुजारी बन यह बातें करने लगे हो। यह भी खेल है। कोई–2 मनुष्य नरम दिल होते हैं, तो खेल देखकर भी रो पड़ते हैं। बाप तो कहते हैं, जिन रोया तिन खोया। सतयुग में रोने की बात ही नहीं। यहाँ भी बाप कहते हैं रोना न है। रोते हैं द्वापर कलयुग। सतयुग में कब रोते ही नहीं। पिछाड़ी में तो किसको रोने की फुर्सत ही नहीं रहेगी। अचानक मरते रहेंगे। हायराम भी नहीं कह सकेंगे। विनाश ऐसा होगा जो ज़रा भी दुःख नहीं; क्योंकि हॉस्पिटल आदि तो रहेंगे नहीं; इसलिए चीज़ें ही ऐसी बनाते हैं। तो बाप समझाते हैं, पत्थर बुद्धि, महान मूर्ख बन जाते हैं। कुछ भी समझते नहीं। बन्दर से भी बदतर। बड़े बन्दर तो तुम बनते हो। तुम बन्दरों की मैं सु(से)ना लेता हूँ, रावण पर जीत पाने लिए। अभी तुमको बाप युक्ति बतलाते हैं, रावण पर जीत कैसे पानी है। सभी सीताओं को रावण के(ी) ज़जीरों से छुड़ाना है। यह सभी समझने की बातें हैं। सिवाय इस ज्ञान के बाकी सभी 100% मूर्ख हैं। 100% से और परसेंट कुछ हो तो लगा सकते हो। उन्हों का नाम ही रखा जाता है सूरत मनुष्य की है सीरत बन्दर की है। है मनुष्य; परंतु बुद्धि बन्दर से भी बदतर है; इसलिए भगवानुवाचः, बच्चों को ही कहते हैं हियर नो ईविल..... भक्ति मार्ग की बातें तुम सुनते–2 दुगर्ति में आकर पहुँचे हो। कोई बोले हायराम। तुम कान बंद कर लो। बोलो, तुम राम किसको कहते हो? गांधी को(के) हाथ में गीता थी और याद करता था चन्द्रवंशी राम को। गीता तो है सूर्यवंशी की। रामराज्य तो एक भगवान ही स्थापन करते हैं। मनुष्य क्या कर सकते। अभी श्रीमत तुमको मिलती है। तुम ही श्रेष्ठ बनेंगे। यहाँ तो श्री–2 का टाइटिल सभी को दे दिया है। अच्छा फिर भी बाप कहते हैं, अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। कितना वण्डरफुल है। हार और जीत का खेल वण्डर फुल है। तो बाप ही समझाते हैं। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

रात्रिक्लास 14/6/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

सात रोज में अगर ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ नहीं बनते हैं, तो बुद्धू कहेंगे। प्रजा में चले जावेंगे। वास्तव में सात दिन का कोर्स है। इसमें समझ कर समझाने लायक बन जाना है। मेरे ध्यान में सात रोज में एकदम तैयार हो जाना चाहिए। सात रोज यहाँ आकर अन्उ(द)र रहें, न पत्र व्यवहार न कोई से मिलें। क्वारन टाइम में रहना पड़े। सारा दिन यहाँ संग में। उनको सात रोज कहा जाता है। तो फिर जल्दी2 पास होकर निकल पड़ेंगे सर्विस पर। मूल बात एक बात समझ जायें तो आपे ही उठ जायें। बाप को याद करने से स्वर्ग की बादशाही मिलती है। दैवी गुण ज़रूर धारण करनी है। नब्ज़ देखने वाला बड़ा होशियार चाहिए। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है यह नॉलेज तो बुद्धि में ज़रूर होनी चाहिए। स्वदर्शनचक्रधारी हो बैठना है। बच्चों को सर्विस में लग–लगा होना चाहिए। कोई राय हो बाबा यहां क्या2 होना चाहिए बता सकते हैं। घर के बच्चे हो ना। यह है टावर आफ सायलेन्स। मनुष्य शान्ति चाहते हैं ना। तुम बैठते ही ऐसे हो जैसे कि शरीर छोड़कर जाते हो। यह भी बुद्धि में रखना है टॉकी को छोड़ जावें मुवी में। सायलेन्स में जाना है। शान्ति बहुत रहनी चाहिए। आवाज़ न हो। शान्ति से रहने से कोई को भी आने से मज़ा आवेगा। यहाँ मरना सिखाया जाता है। हमको जाना है अपने घर। दुनिया गुल2 बन जावेगी। फिर हम आवेंगे। जो कोई भी आवे तुम बोलो, तुम बन्दर से देवता बनना चाहते हो? तो बनो। प्रबन्ध मकान आदि का करो। बोझा नहीं पड़ेगा। बाबा पास पैसे बहुत हैं। राजाई हम स्थापन करते हैं। तो पैसे भी हम खर्च करते हैं। मालिक भी हम बनेंगे। युक्ति से ईशारा भी देना पड़ता है। हम ब्राह्मण अपने लिए राई (राजाई) स्थापन कर रहे हैं। तो हम अपना ही खर्चा करेंगे। भिखारी थोड़े ही हैं, जो दूसरे का पैसा लगावेंगे। हम अपना ही लगाते हैं। यह योगबल की बात है। बाप कहते हैं, याद से तुम सतोप्रधान बन नई दुनिया में आ जावेंगे। हम अपने पैसे से अपनी राजधानी स्थापन करते हैं। हम(क)ो भीख मांगने का नहीं है। हम राजाई स्थापन करने लिए अपने गर्वमेन्ट से ही नहीं लेते हैं, तो बाहर वालों से कैसे लेंगे। इतने ढेर बच्चे बैठे हैं। जानते हैं यह सब खलास हो जाना है; इसलिए अपना लगाते रहते हैं। हम अपने पैसे लगा सकते हैं फिर साहूकार से लेवें ही क्यों। बाबा पास जमा करते हैं, बाबा भी मदद करते हैं। इनकम टैक्स आदि की तो बात ही नहीं। वन्डरफुल बात है ना। पढ़ाई से राजधानी मिलता(ी) है। पैसे की तो दरकार ही नहीं रहती। हम जानते हैं हम जो करेंगे हम पावेंगे। अपने लिए ही राजधानी स्थापन करते हैं। भीख लेने की बात ही नहीं। कोई में भी मोह न रखना है; क्योंकि जानते हैं यह सभी खत्म होनी है। मोह किसमें रखें? तुम सभी आत्माएँ पढ़ रहे(ी) हो। मोह की बात ही नहीं। रग तोड़नी है। हम आत्माओं को जाना है घर। यह पुराना शरीर छोड़ देना है। हम आत्माएँ चले(ी) जावेंगे(ी) फिर आवेंगे(ी) नहीं। मोह रखेंगे तो अंत काल जो.... सुना है कब गीत? बाबा की स्मृति में अंत काल जो मरेंगे तो स्वर्ग का मालिक बन जावेंगे। तुम अपना वकील आपे ही बनते हो, श्रीमत पर। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।

डायरैक्शनः– सभी सेन्टर्स के स्टुडेन्ट्स को खास यह बात ध्यान में रखनी है कि आजकल पोस्टेज चार्ज बढ़ गये हैं; इसलिए पोस्ट–ऑफिस से पूछकर पोस्ट पर टिकेट पूरी लगावें। नहीं तो यहाँ पर डबल, ट्रिबल ड(द)न्ड भी भरना पड़ता है और पोस्ट भी दो/चार दिन लेट मिलती है।

(2) :– नांगल में वृजमोहन ने सेन्टर का मकान बदली किया है। जिसकी एड्रेस लिख रहे हैंः– फोन, नम्बरः–506

BRAHMA KUMARIS
11/4/4, SECTOR,
NAYA NANGAL (Pb).